

भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद् (पंजीकृत) चेन्नई

ज्योतिष विशारद परीक्षा : दिसम्बर 2011

समय : 3 घण्टे

प्रश्न पत्र-III

कुल अंक : 50

नोट :- कुल पांच प्रश्नों का उत्तर दें। प्रश्न 1 एवं 6 अनिवार्य हैं। प्रत्येक भाग से कम से कम एक और प्रश्न का उत्तर देते हुए शेष तीन प्रश्नों का उत्तर दें। सब प्रश्नों का अंक समान है।

भाग-I (आयुर्दाय)

1. निम्नलिखित में से दीर्घायु, मध्यायु तथा अल्पायु के योग बताइए :-
(अ) लग्नेश अथवा अष्टमेश में खली पंचम भाव में है।
(आ) षष्ठमेश, षष्ठम भाव में होने पर।
(इ) शुक्र, बृहस्पति एवं बुध ग्यारहवें भाग में होने पर।
(ई) बृहस्पति छठें भाग में शुक्र-अष्टम भाव तथा बुध-सप्तम भाग में होने पर।
(उ) शनि-सिंह में तथा सूर्य-मकर में होने पर।
(ऊ) शुभ ग्रह त्रिकोण व केन्द्र में तथा पापी ग्रह अष्टम भाव में होने पर।
(ए) लग्न और चंद्र पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो।
(ऐ) शुक्र-लग्न में बृहस्पति केन्द्र पर तथा शनि नवम में होने पर।
(ओ) बृहस्पति लग्न और चंद्र तथा राहु सप्तम भाव में होने पर।
(औ) अष्टमेश अष्टम भाव में होने पर।
2. (क) बालरिष्ट के पांच योग तथा बालरिष्ट भंग होने के पांच योगों की व्याख्या करें।
(ख) निम्नलिखित कुण्डली का अध्ययन करके यह बतायें क्या यह कुण्डली अल्पायु की है? यदि हाँ तो जातक की आयु सीमा का अनुमान लगायें।
जन्म 02 नवम्बर 1935, शुक्र शेष- 8वर्ष 03 माह 18 दिन
लग्न-तुला 06:00, सूर्य-तुला 15:43, चंद्र-धनु 21:08, मंगल-धनु 10:14
बुध(व)-कन्या 27:00, बृहस्पति-वृश्चिक 05:32, शुक्र-कन्या 00:08,
शनि-कुम्भ 10:38, राहु-धनु 23:04, केतु-मिथुन 23:04
3. निम्नलिखित जन्म लग्न के अनुसार पिण्डायु की गणना करें।
जन्म 11 फरवरी 1959, समय 14:42 बजे, स्थान दिल्ली, शनि शेष 8व,
10 मा 18 दि
लग्न-मिथुन 15:23, सूर्य-मकर 28:37, चंद्र-मीन 10:26, मंगल-वृषभ 07:04
बुध-मकर 26:27, बृहस्पति-वृश्चिक 06:48, शुक्र-कुम्भ 20:31, शनि-धनु
10:36, राहु-कन्या 20:54, केतु-मीन 20:54
4. किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर दें।
(क) मारक ग्रह से क्या अभिप्राय है? क्रमवार मारकों का वर्णन करें।
(ख) मेष, सिंह तथा धनु लग्नों के लिए मृत्युदायक ग्रह कौन से हैं?
(ग) आयु गणना के लिए पिण्डायु, अंशायु तथा निसर्गायु का प्रयोग किन परिस्थितियों में किया जाता है?
5. किन्हीं तीन पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें :-

(क) दिन मृत्यु (ख) गंडांत (ग) विषघटी काल (घ) छिद्र दशा

भाग-II (चिकित्सा ज्योतिष)

6. निम्नलिखित कथन सत्य है या असत्य?
- (अ) शुक्र कैंसर का कारक है।
 - (ब) काल पुरुष कुण्डली में तुला बाह्य जननांग को दर्शाता है।
 - (स) ग्यारहवें भाव का प्रथम द्रेष्काण दाहिने कान को दर्शाता है।
 - (द) बुध अस्थमा रोग का परिचायक है।
 - (ड) बृहस्पति चिड़चिड़े प्रवृत्ति को दर्शाता है।
 - (फ) चंद्र से 64 वें नवांश को अत्यंत शुभ माना जाता है।
 - (ग) अग्नि राशियाँ बीमारियों के लिए अधिक प्रतिरोधक क्षमता दर्शाती है।
 - ह) वृश्चिक में अष्टम भाव में केतु पाए जाने पर अर्श रोग दर्शाता है।
 - (इ) बृहस्पति रक्त विकार का परिचायक है।
 - (ज) शुक्र पेडू दर्शाता है।
7. 4, 8, 9 तथा 12 भाव जन्मांग में किन किन अंगों को दर्शाते हैं? ये किस ग्रह के अंतर्गत आते हैं?
8. निम्न रोग किन ग्रह योगों के कारण होते हैं?
- (क) हृदय रोग
 - (ख) पागलपन
 - (ग) अस्थमा
 - (घ) अंधापन
9. निम्नलिखित कुण्डली का अध्ययन कर बतायें कि क्या यह अपेन्डिइटिज (उण्डुक-सोथ) को इंगित करता है? यदि हां तो इसके ज्योतिषीय कारकों की व्याख्या करें। क्या आप रोग का समय निश्चित कर सकते हैं।
- जन्म 3 अक्टूबर 1982, समय 16:56 बजे, स्थान-चंडीगढ़
- बुध शेष 10 वर्ष 07 माह 00 दिन
- लग्न-कुम्भ 22:00, सूर्य-कन्या 16:19, चन्द्र-मीन 21:42, मंगल-वृश्चिक 15:42, बुध(व)-कन्या 13:41, बृहस्पति-तुला 18:27, शुक्र-कन्या 08:09, शनि-कन्या 29:42, राहू-मिथुन 15:02, केतु-धनु 15:02
10. किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखें :-
- (क) गठिया रोग के ज्योतिषीय कारक
 - (ख) 22 वें द्रेष्काण का स्वामी
 - (ग) जन्मजात बीमारियों के ज्योतिषीय कारण